हिन्दी विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

XII

सप्रसंग व्याख्या

जहाँ आदमी को अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खाने पीने, चलने फिरने आदि की जरूरत है, वहाँ बातचीत की भी उसको अत्यन्त आवश्यकता है। जो कुछ मवाद या धुँआ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिये भाप बनकर बाहर निकल पड़ता है।

संदर्भ-प्रसंग — प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'दिगन्त' में संकलित 'बालकृष्ण भट्ट' के बात-चीत नामक निबन्ध से उद्धृत है। इन पंक्तियों में व्यक्ति के जीवन में बात-चीत के महत्व को समझाया गया है।

व्याख्या — जिस प्रकार जीवन को आनन्दमय एवं सुखी बनाने के लिए स्वादिष्ट भोजन और पानी की आवश्यकता होती है और इनके बिना जीवन एक क्षण भी नहीं चल सकता। उसी

wledge is a tangible asset, quite often the most important tool in your work. – A.P.J. Abdul Kalam

रिवाद से ईर्ष्या द्वेष और वैर भाव व्यक्ति को उसी प्रकार पीड़ा पहुँचाते हैं, जिसप्रकार फोड़े में पड़ी मवाद और घर में घुसा चूँहा व्यक्ति को पीड़ा पहुँचाते हैं। इनको निकाले बिना व्यक्ति को पीड़ा में आराम नहीं मिलता।

आगे लेखक कहता है कि व्यक्ति के मन में रिवाद रूपी मवाद और चूँहरूपी ईर्ष्या-द्वेष को निकालने का एकमात्र उपाय बात-चीत है क्योंकि व्यक्ति अपनी बात-चीत के द्वारा अपने मन के ईर्ष्या-द्वेष को बाहर निकालकर स्वयं को हल्का करता है। एक दूसरे की शिकायतें भी बातचीत के द्वारा ही दूर हो पाती हैं। जब व्यक्ति को किस से शिकायत नहीं होती और उसके मन में किसी प्रति ईर्ष्या-द्वेष और वैर-भाव भी नहीं होता, त वह सबसे सुखी और आनन्दित होता है। इसीलि खान-पान और चलने-फिरने के समान ही व्यक्ति के लिए बातचीत अत्यावश्यक है।

हिन्दी विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A, Part III

विषय — भारतीय आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य के लक्षणों का विवेचन करें।—

वैसे तो किसी भी चीज को परिभाषित करना अत्यन्त कठिन कार्य है। और फिर काव्य तो अत्यन्त ही व्यापक साहित्यिक विधा है। अतः इसे परिभाषा [के] खूँटे में बाँधना अत्यन्त ही कठिन है। फिर भी द्वानों ने काव्य लक्षण का विवेचन अपने-अपने ढ किया है।

संस्कृत आचार्यों में भामह ने काव्य को समन्वित शब्दार्थ कहा है। उनके अनुसार दार्थौ सहितौ काव्यम्" अर्थात् 'शब्द एवं अ ाव होना ही काव्य है। भामह के इस परिभा लोचकों ने यह कहकर अधूरा सिद्ध करने क या है कि इसमें 'रस' की कहीं चर्चा तक है, केवल शब्द-अर्थ की ही बात

वामन के अनुसार – "काव्य वही है, जिसका सौंदर्य अलंकार से निखरता है यानी जिसमें अलंकार हो वह काव्य है। इसी प्रकार आनन्दवर्द्धन, कुन्तक आदि ने भी काव्य में रस, अलंकार, शब्द एवं अर्थ की अन्विति पर बल दिया है।

आचार्य मम्मट के अनुसार – "जिसमें गुण हो, जो दोषरहित हो एवं वैकल्पिक रूप से अलंकार युक्त हो, उसे काव्य कहते हैं"। उन्होंने काव्य के लक्षण को निरूपित करते हुए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया है –

दोष रहित रचना ही काव्य है।

काव्य की कल्पना शब्द और अर्थ दोनों के समन्वय से होती है।

गुण से रसात्मकता का बोध होता है।

आचार्य मम्मट के इस परिभाषा
आचार्य विश्वनाथ ने त्रुटिपूर्ण घोषित
है। उनके अनुसार कोई भी काव्य पूर्ण
रहित नहीं हो सकती, अतः निर्दोषता

काव्य का लक्षण नहीं हो सकता।

आचार्य विश्वनाथ ने "वाक्यं रसात्मकं काव्यं" को काव्य की परिभाषा से बाँधने का प्रयास किया। यहाँ वाक्य से उनका मतलब सार्थक शब्द है। यदि हम विश्वनाथ की इस लोकप्रिय परिभाषा को मान लें, तो सहीन काव्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मम्मट का रस पारिभाषिक एवं व्यापार-सापेक्ष है जिसे समझे बिना रस-निष्पत्ति की प्रक्रिया जानी नहीं जा सकती। विश्वनाथ की परिभाषा में अव्याप्ति दोष है।

पंडित जगन्नाथ ने काव्य का सटीक लक्षण निरूपित करते हुए बताया है —
"रमणीयार्थ प्रतिपादकः काव्यम्"

अर्थात रमणीय अर्थ को प्रतिपादन करने वाला ही काव्य होता है।

आधुनिक भारतीय विचारकों में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार

— " ~~आदमी~~ काव्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनन्द या चमत्कार की सृष्टि करे। ~~जय शंकर प्रसाद~~'

जयशंकर प्रसाद के अनुसार — " काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है, जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है।"

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' के अनुसार — जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्तिसाधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती है, उसे कविता कहते हैं।" शुक्ल जी की यह परिभाषा बताती है कि भारतीय साहित्यशास्त्र व्यवहारिक एवं संतुलित है। रस से उनका अभिप्राय आनन्द बोध अथवा सौंदर्यबोध से है। रमणीयता उस तत्व का प्रतिनिधित्व करती है जो लोक मन को प्रभावित करता है।